Q1. भारत के पर्यटन मंत्रालय ने हाल ही में एक महत्वाकांक्षी अभियान का अनावरण किया है जिसका उद्देश्य भारत को वैश्विक मंच पर एक प्रमुख विवाह स्थल के रूप में प्रदर्शित करना है। शादियों और अन्य कार्यक्रमों के लिए एक प्रमुख वैश्विक गंतव्य के रूप में भारत की सामर्थ्य और कमजोरियों पर टिप्पणी करें।

दृष्टिकोण:

उत्तर में निम्नलिखित भाग होने चाहिए:

- **परिचय:** पर्यटन मंत्रालय की हालिया पहल से शुरुआत करें। वैश्विक आयोजनों के लिए एक विविध और आकर्षक गंतव्य के रूप में भारत के विचार का परिचय दें।
- **मुख्य भाग:**
  - सांस्कृतिक समृद्धि से लेकर विविध स्थानों तक, एक विवाह स्थल के रूप में भारत द्वारा प्रदान किए जाने वाले विभिन्न लाभों की गणना करें।
  - उन चुनौतियों और सीमाओं पर चर्चा करें जिन्हें भारत की पूर्ण क्षमता का एहसास करने के लिए संबोधित करने की आवश्यकता है।
  - जानें कि शादियों के अलावा अन्य आयोजनों के लिए सामर्थ्य का लाभ कैसे उठाया जा सकता है।
- **निष्कर्ष:** अभियान के रणनीतिक महत्व को दोहराते हुए निष्कर्ष दें।

मुख्य शब्द:

- समृद्ध सांस्कृतिक विरासत
- विविध विवाह थीम
- तार्किक चुनौतियाँ
- नियामक बाधाएँ
- कॉर्पोरेट रिट्रीट
- इवेंट मैनेजमेंट
- सुरक्षा चिंताएं

परिचय:

भारत, परंपराओं, मूल्यों और स्थानों के अपने विविध समायोजन के साथ, हमेशा विभिन्न वैश्विक आकर्षणों के लिए रुचि का स्थान रहा है। भारत को एक अग्रणी वैश्विक विवाह स्थल के रूप में स्थापित करने के लिए पर्यटन मंत्रालय का महत्वाकांक्षी अभियान इस प्रयास में भारत की सामर्थ्य और सुधार के संभावित क्षेत्रों का पता लगाने के लिए एक खिड़की प्रदान करता है।

मुख्य भाग:

सामर्थ्य:

- **समृद्ध सांस्कृतिक विरासत:** भारत के असंख्य रीति-रिवाज और परंपरा एक अनोखा आकर्षण प्रदान करते हैं जिसकी बराबरी कुछ ही देश कर सकते हैं। हर राज्य और हर शहर की अपनी परंपराएं होती हैं, जो इसे शादियों के लिए एक आकर्षक स्थल बनाती हैं।
- **विविध विवाह थीम:** चाहे वह राजस्थान के ऐतिहासिक किलों में एक शाही शादी हो, गोवा में समुद्र तट पर एक कार्यक्रम हो, या हिमालय में एक शांत मामला हो, भारत विषयगत विकल्पों का एक व्यापक स्पेक्ट्रम प्रदान करता है।

IASBABA

- **किफायती विलासिता:** महलनुमा स्थानों से लेकर कुशल श्रमिकों तक, भारत प्रतिस्पर्धी कीमतों पर विलासिता प्रदान करता है। यह लागत लाभ भारतीय शादियों को भव्य और किफायती दोनों बना सकता है।
- **इवेंट मैनेजमेंट में विशेषज्ञता:** देश में अनुभवी विवाह योजनाकारों का दावा है, जो भव्य आयोजनों के आयोजन के लिए प्रसिद्ध हैं, जो यह सुनिश्चित करते हैं कि प्रत्येक समारोह एक यादगार अनुभव में बदल जाए।
- **अतुल्य स्थान:** चाहे वह केरल के शांत बैकवाटर हों, राजस्थान के रेगिस्तानी परिदृश्य हों, या अंडमान के प्राचीन समुद्र तट हों, भारत किसी भी विवाह समारोह के लिए ढेर सारी सुरम्य पृष्ठभूमि प्रदान करता है।

कमजोरियाँ:

- **अवधारणात्मक सीमाएँ:** अपनी विशाल पेशकशों के बावजूद, भारत अपनी शाही, आलीशान शादियों के लिए जाना जाता है। इस परिप्रेक्ष्य को व्यापक बनाने और देश की बहुमुखी प्रतिभा को प्रदर्शित करने की आवश्यकता है।
- **तार्किक चुनौतियाँ:** देश भर में सड़कों, परिवहन और सार्वजनिक सेवाओं के अलग-अलग मानक कभी-कभी समन्वय संबंधी चुनौतियाँ पैदा कर सकते हैं।
- **नियामक बाधाएँ:** अंतर्राष्ट्रीय शादियों को नौकरशाही बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है, जो परेशानी मुक्त अनुभव की तलाश करने वालों के लिए एक बाधा हो सकती है।
- **सुरक्षा संबंधी चिंताएँ:** समय-समय पर सुरक्षा संबंधी मुद्दे, विशेष रूप से महिला पर्यटकों से संबंधित, एक संभावित चुनौती हो सकते हैं, जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

भारत को एक प्रतिष्ठित विवाह स्थल के रूप में स्थापित करने वाले कारक अन्य घटनाओं के लिए भी सही हैं। कॉर्पोरेट रिट्रीट, अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, आध्यात्मिक सम्मेलन और सांस्कृतिक उत्सव सभी भारत की विविध पेशकशों से लाभ उठा सकते हैं। **गोवा के रिसॉर्ट में एक कॉर्पोरेट कार्यक्रम या हिमालय में एक आध्यात्मिक रिट्रीट उन स्थानों में होने वाली शादियों के समान ही आकर्षण रखता है।**

निष्कर्ष:

भारत को एक प्रमुख विवाह स्थल के रूप में बढ़ावा देने का पर्यटन मंत्रालय का अभियान सही दिशा में एक कदम है। हालाँकि देश में कई विशिष्टताएं हैं जो इसे वैश्विक आयोजनों के लिए एक आकर्षक विकल्प बनाती हैं, लेकिन कुछ चुनौतियाँ भी हैं जिनका समाधान करने की आवश्यकता है। लॉजिस्टिक्स को सुव्यवस्थित करना, सुरक्षा मानकों में सुधार करना और देश की विविध पेशकशों का प्रभावी ढंग से विपणन करना भारत को वैश्विक इवेंट टूरिज्म में सबसे आगे ले जा सकता है।

Value Addition Points:

भारत की वैश्विक अपील को बढ़ाना:

- **विरासत स्थल:** अद्वितीय, ऐतिहासिक थीम वाली शादियों या कार्यक्रमों के लिए हम्पी, अजंता-एलोरा जैसे यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों का लाभ उठाएं।
- **गैस्ट्रोनोमिक आकर्षण:** भारत का विविध पाक परिदृश्य (विविध पकवान) एक प्रमुख आकर्षण हो सकता है। शादी के मेनू के हिस्से के रूप में क्षेत्रीय व्यंजनों की पेशकश एक अनूठा प्रस्ताव हो सकता है।
- **पारंपरिक कलाएँ:** क्षेत्रीय नृत्य, कला और शिल्प को शामिल करें। उदाहरण के लिए, उत्तर भारतीय शादी में कथक प्रदर्शन या दक्षिण भारतीय शादी में थेय्यम।
- **पर्यावरण-अनुकूल विकल्प:** स्थानीय संसाधनों का उपयोग करते हुए सतत, पर्यावरण-अनुकूल शादियों को बढ़ावा दें, जिससे पर्यावरण के प्रति जागरूक वैश्विक दर्शकों को आकर्षित किया जा सके।
- **अनुकूलित पैकेज:** मुख्य कार्यक्रम के साथ सांस्कृतिक अनुभवों का मिश्रण करते हुए, शादी के मेहमानों के लिए अनुकूलित टूर पैकेज की पेशकश करने के लिए ट्रैवल एजेंसियों के साथ सहयोग करें।

IASBABA

Q2. दक्षिण चीन सागर में क्षेत्रीय विवादों की जांच करें तथा सामान्य रूप से दक्षिण एशियाई क्षेत्र और विशेष रूप से भारत पर उनके प्रभाव को स्पष्ट करें।

दृष्टिकोण:

उत्तर में निम्नलिखित भाग होने चाहिए:

- **परिचय:** दक्षिण चीन सागर को एक महत्वपूर्ण जलमार्ग के रूप में प्रस्तुत करें जो अपने क्षेत्रीय विवादों और उनके भू-राजनीतिक निहितार्थों के लिए जाना जाता है।
- **मुख्य भाग:**
  - दक्षिण चीन सागर में मुख्य विवादों का संक्षेप में वर्णन करें।
  - व्यापक दक्षिण एशियाई क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा, अर्थशास्त्र और भू-राजनीतिक संतुलन पर इन विवादों के परिणामों का विश्लेषण करें।
  - गहराई से बताएं कि ये विवाद भारत की रणनीतिक, आर्थिक और कूटनीतिक पहलों को कैसे प्रभावित करते हैं।
- **निष्कर्ष:** क्षेत्रीय भू-राजनीतिक परिदृश्य और भारत की रणनीतिक प्रतिक्रिया पर विवादों के व्यापक निहितार्थ पर जोर देते हुए निष्कर्ष दें।

मुख्य शब्द:

- पार्सल द्वीप समूह
- स्प्रैटली द्वीप समूह
- स्कारबोरो शोल (Scarborough Shoal)
- नाइन-डैश लाइन
- समुद्री सुरक्षा
- एक्ट ईस्ट पॉलिसी
- क्वाड फ्रेमवर्क

परिचय:

दक्षिण चीन सागर (एससीएस) एक महत्वपूर्ण जलमार्ग है जो न केवल अपने समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों के लिए बल्कि कई देशों से जुड़े क्षेत्रीय विवादों के लिए भी जाना जाता है। क्षेत्र के भू-राजनीतिक महत्व को देखते हुए, इन विवादों का दक्षिण एशियाई क्षेत्र, विशेषकर भारत पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

मुख्य भाग:

दक्षिण चीन सागर में क्षेत्रीय विवाद:

- **पारासेल द्वीप समूह:** चीन, ताइवान और वियतनाम के बीच विवादित। वर्तमान में चीन द्वारा नियंत्रित है।
- **स्प्रैटली द्वीप समूह:** चीन, ताइवान, वियतनाम, मलेशिया, फिलीपींस और ब्रुनेई द्वारा आंशिक या पूर्ण रूप से दावा किया गया। द्वीपों में विशेष रूप से चीन द्वारा सैन्यीकरण में वृद्धि देखी गई है।

IASBABA

- **स्कारबोरो शोल:** चीन, ताइवान और फिलीपींस द्वारा दावा किया गया। 2012 से चीन का इस पर वास्तविक नियंत्रण है।
- **नेटुना द्वीप समूह:** द्वीपों के आसपास इंडोनेशिया का विशेष आर्थिक क्षेत्र चीन की नौ-डैश लाइन के साथ ओवरलैप होता है, जिससे तनाव पैदा होता है।
- **नाइन-डैश लाइन:** चीन की विवादास्पद सीमांकन रेखा दक्षिण चीन सागर के अधिकांश हिस्से को कवर करती है, जिसे अन्य दावेदारों ने खारिज कर दिया है और समुद्र के कानून पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन (यूएनसीएलओएस) के तहत मान्यता प्राप्त नहीं है।

दक्षिण एशियाई क्षेत्र और भारत के लिए निहितार्थ:

- **समुद्री सुरक्षा:** विवादों से टकराव हो सकता है जो समुद्री यातायात को बाधित करता है, शिपिंग लेन के लिए सुरक्षा जोखिम पैदा करता है और क्षेत्र में व्यापार को प्रभावित करता है।
- **आर्थिक चिंताएँ:** दक्षिण चीन सागर में तेल और प्राकृतिक गैस का महत्वपूर्ण भंडार है। तनाव निवेश और अन्वेषण गतिविधियों को बाधित कर सकता है, जिससे कई दक्षिण एशियाई देशों की ऊर्जा सुरक्षा प्रभावित हो सकती है।
- **भू-राजनीतिक शक्ति का खेल:** क्षेत्रीय विवाद अमेरिका, चीन और रूस जैसी प्रमुख शक्तियों के लिए अपना प्रभुत्व प्रदर्शित करने का मंच बन जाते हैं, जिससे दक्षिण एशियाई क्षेत्र में शक्ति संतुलन प्रभावित होता है।
- **विशेष रूप से भारत के लिए:**
  - **रणनीतिक हित:** भारत ने वियतनाम के सहयोग से दक्षिण चीन सागर में तेल अन्वेषण निवेश किया है। विवाद इन हितों को ख़तरे में डाल सकते हैं।
  - **एक्ट ईस्ट नीति:** भारत की एक्ट ईस्ट नीति, जो दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के साथ संबंधों को मजबूत करना चाहती है, क्षेत्र की अस्थिरता से प्रभावित हो सकती है।
  - **नौवहन की स्वतंत्रता:** भारत ने UNCLOS का सम्मान करते हुए लगातार दक्षिण चीन सागर में नौवहन और हवाई उड़ान की स्वतंत्रता के महत्व पर जोर दिया है।
  - **चीन का प्रतिसंतुलन:** भारत वियतनाम, सिंगापुर और इंडोनेशिया जैसे देशों के साथ नौसैनिक सहयोग बढ़ा रहा है। दक्षिण चीन सागर विवाद भारत के लिए इन देशों के साथ समुद्री सहयोग को मजबूत करके चीन की दृढ़ता को संतुलित करने का एक अवसर प्रदान करता है।
  - **क्वाड फ्रेमवर्क** : भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ, चतुर्भुज सुरक्षा वार्ता का हिस्सा है, जो एक स्वतंत्र और खुले इंडो-पैसिफिक पर जोर देता है। दक्षिण चीन सागर विवाद सीधे तौर पर इसको प्रभावित करता है।

निष्कर्ष:

दक्षिण चीन सागर में क्षेत्रीय विवाद केवल क्षेत्रीय चिंताएँ नहीं हैं; संपूर्ण दक्षिण एशियाई क्षेत्र के भू-राजनीतिक परिदृश्य को प्रभावित करने वाले उनके व्यापक निहितार्थ हैं। भारत के लिए, ये विवाद रणनीतिक प्रतिक्रिया तैयार करने, नियम-आधारित समुद्री व्यवस्था के महत्व पर जोर देने और क्षेत्रीय भागीदारों के साथ सहयोग को बढ़ावा देने के लिए चुनौतियां और अवसर दोनों प्रदान करते हैं।

Value Addition Points:

दक्षिण चीन सागर पर परिप्रेक्ष्य:

- **ऐतिहासिक संदर्भ:** समुद्र के साथ चीन के ऐतिहासिक संबंधों को गहराई प्रदान करने के लिए 15वीं शताब्दी में झेंग हे (Zheng He) जैसी ऐतिहासिक यात्राओं का हवाला दिया जा सकता है।

IASBABA

- **कानूनी ढांचा:** फिलीपींस के पक्ष में चीन के दावों को खारिज करने वाले 2016 के स्थायी मध्यस्थता न्यायालय के फैसले का संदर्भ लें।
- **पर्यावरणीय चिंताएँ:** भूमि सुधार, मछली पकड़ने और सैन्यीकरण के कारण समुद्री जैव विविधता के लिए खतरे पर प्रकाश डालें।
- **क्षेत्रीय कूटनीति:** आसियान की भूमिका और आसियान क्षेत्रीय मंच (एआरएफ) जैसे उसके तंत्र पर चर्चा की जा सकती है।
- **आर्थिक महत्व:** दुनिया का लगभग एक तिहाई जहाज़ दक्षिण चीन सागर से होकर गुजरता है, जिससे सालाना 3 ट्रिलियन डॉलर से अधिक का व्यापार होता है।
- **भारत की समुद्री कूटनीति:** नौसेना सहयोग को बढ़ावा देने के उदाहरण के रूप में मिलन नौसेना अभ्यास जैसी भारत की पहल का उल्लेख किया जा सकता है।
- **वैश्विक शक्ति गतिशीलता:** दक्षिण चीन सागर को व्यापक यूएस-चीन रणनीतिक प्रतिस्पर्धा में एक छोटे मंच के रूप में देखा जा सकता है।

Q3. आपदा प्रतिरोधी बुनियादी ढांचे के लिए गठबंधन (CDRI) हाल ही में खबरों में था। इसका विश्व स्तर पर और भारत में आपदा प्रबंधन पर क्या प्रभाव पड़ा है? विस्तारपूर्वक बताएं।

दृष्टिकोण:

उत्तर में निम्नलिखित भाग होने चाहिए:

- **परिचय:** सीडीआरआई क्या है और इसके मुख्य उद्देश्य के बारे में संक्षेप में बताएं।
- **मुख्य भाग:**
  - सीडीआरआई की उत्पत्ति और उद्देश्यों पर चर्चा करें।
  - सीडीआरआई के वैश्विक प्रभाव पर प्रकाश डालें, इसकी बढ़ती सदस्यता और सर्वोत्तम प्रथाओं को बढ़ावा देने में भूमिका पर जोर दें।
  - भारत पर सीडीआरआई के विशिष्ट प्रभाव के बारे में जानें।
- **निष्कर्ष:** जलवायु संबंधी चुनौतियों से निपटने में सीडीआरआई के महत्व और सतत एवं लचीले विकास को सुनिश्चित करने में इसकी भूमिका का सारांश देते हुए निष्कर्ष दें।

मुख्य शब्द:

- आपदा प्रतिरोधी बुनियादी ढांचे के लिए गठबंधन (सीडीआरआई)
- जलवायु और आपदा जोखिम
- वैश्विक साझेदारी
- सतत विकास
- बुनियादी ढांचे का लचीलापन
- संयुक्त राष्ट्र जलवायु कार्रवाई शिखर सम्मेलन
- नेतृत्व भूमिका

परिचय:

IASBABA

आपदा प्रतिरोधी बुनियादी ढांचे के लिए गठबंधन (सीडीआरआई) एक महत्वपूर्ण वैश्विक पहल है जिसका उद्देश्य जलवायु और आपदा जोखिमों के खिलाफ बुनियादी ढांचे के लचीलेपन को बढ़ावा देना है। भारत द्वारा स्थापित, यह जलवायु परिवर्तन और आपदा लचीलेपन के क्षेत्र में नेतृत्वकारी भूमिका निभाने के लिए देश की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

मुख्य भाग:

उत्पत्ति और उद्देश्य:

- 2019 में संयुक्त राष्ट्र जलवायु कार्रवाई शिखर सम्मेलन के दौरान भारतीय प्रधान मंत्री द्वारा लॉन्च किया गया, सीडीआरआई बुनियादी ढांचे के निर्माण में वैश्विक प्रयासों का नेतृत्व करने के भारत के इरादे को दर्शाता है जो जलवायु संबंधी आपदाओं का सामना कर सकता है।
- गठबंधन का उद्देश्य सरकारों, संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों, वित्तीय संस्थानों, निजी क्षेत्र और शिक्षा जगत से विभिन्न हितधारकों को एकत्रित करना है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि बुनियादी ढाँचा प्रणालियाँ जलवायु और आपदा जोखिमों के प्रति लचीली हों।

वैश्विक प्रभाव:

- **सदस्यता वृद्धि:**
  - इसकी स्थापना के बाद से, 31 देश, 6 अंतर्राष्ट्रीय संगठन और 2 निजी क्षेत्र की संस्थाएँ सीडीआरआई में शामिल हो गई हैं।
  - उन्नत अर्थव्यवस्थाओं से लेकर जलवायु परिवर्तन के प्रति सर्वाधिक संवेदनशील देशों तक फैली यह व्यापक और विविध सदस्यता, इसकी वैश्विक प्रासंगिकता और पहुंच को रेखांकित करती है।
- **सर्वोत्तम प्रथाओं को बढ़ावा देना:**
  - एक वैश्विक साझेदारी के रूप में, सीडीआरआई राष्ट्रों के बीच ज्ञान, तकनीकी विशेषज्ञता और सर्वोत्तम प्रथाओं के आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करता है।
  - इस तरह के सहयोग देशों को आपदा लचीलेपन पर ध्यान केंद्रित करते हुए बुनियादी ढांचे के विकास में अत्याधुनिक तरीकों और प्रौद्योगिकियों को अपनाने में सहायता करते हैं।

भारत पर प्रभाव:

- **नेतृत्व भूमिका:**
  - सीडीआरआई भारत को जलवायु परिवर्तन और आपदा लचीलेपन पर वैश्विक चर्चा में सबसे आगे रखता है।
  - सीडीआरआई सचिवालय की स्थापना और मेजबानी करके, भारत सतत विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को बढ़ाता है और अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी नेतृत्व क्षमताओं को प्रदर्शित करता है।
- **वित्तीय प्रतिबद्धता:**
  - भारत सरकार द्वारा पांच वर्षों (2019-2024) में 480 करोड़ रुपये का आवंटन सीडीआरआई को एक व्यवहार्य और प्रभावशाली इकाई बनाने के प्रति उसके समर्पण को रेखांकित करता है।
- **बुनियादी ढांचे का विकास:**
  - एक संस्थापक सदस्य के रूप में, भारत सीडीआरआई की सामूहिक विशेषज्ञता और संसाधनों से सीधे लाभान्वित होता है।
  - यह साझेदारी भारत के विशाल बुनियादी ढांचे के नेटवर्क के लचीले विकास में सहायता करती है, इसे संभावित जलवायु-प्रेरित चुनौतियों से बचाती है।

IASBABA

निष्कर्ष:

सीडीआरआई लचीले बुनियादी ढांचे पर जोर देकर आपदा प्रबंधन के लिए एक सक्रिय दृष्टिकोण का प्रतीक है। जबकि इसका वैश्विक प्रभाव इसकी तेजी से बढ़ती सदस्यता और सहयोगात्मक कार्यों से चिह्नित है, भारत में, यह सतत और लचीले विकास के लिए देश की प्रतिबद्धता को मजबूत करता है। जैसे-जैसे दुनिया बढ़ती जलवायु-संबंधी चुनौतियों से जूझ रही है, सीडीआरआई जैसी पहल विकास लाभ की सुरक्षा और सभी के लिए एक सतत भविष्य सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

Value Addition Points:

सीडीआरआई की उल्लेखनीय उपलब्धियाँ और विशेषताएं:

- **अंत:विषय सहयोग:** सीडीआरआई की अद्वितीय संरचना विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों को एक साथ लाती है, जिससे बुनियादी ढांचे की चुनौतियों का समग्र समाधान सुनिश्चित होता है।
- **स्थानीय अनुकूलन:** विभिन्न देशों के सामने आने वाली अलग-अलग चुनौतियों को पहचानते हुए, सीडीआरआई बुनियादी ढांचे के लचीलेपन के लिए अनुकूलित, क्षेत्र-विशिष्ट समाधानों को बढ़ावा देता है।
- **अनुसंधान एवं विकास:** सीडीआरआई नई प्रौद्योगिकियों और तरीकों की पहचान करने के लिए अनुसंधान एवं विकास पर जोर देता है जो आपदा-लचीले बुनियादी ढांचे के मानकों को बढ़ा सकते हैं।
- **हितधारक जुड़ाव:** अंतर-सरकारी सहयोग के अलावा, सीडीआरआई स्थायी बुनियादी ढांचे के विकास में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को पहचानते हुए, स्थानीय समुदायों और स्वदेशी समूहों के साथ जुड़ाव सुनिश्चित करता है।
- **क्षमता निर्माण:** सीडीआरआई पेशेवरों को कौशल बढ़ाने के लिए कार्यशालाएं, प्रशिक्षण सत्र और सेमिनार आयोजित करता है, यह सुनिश्चित करता है कि वे आपदा-लचीले बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में नवीनतम ज्ञान और तकनीकों से लैस हैं।

Q4. "भारत का दूरसंचार क्षेत्र एक गतिशील कैनवस (dynamic canvas) है, जो डिजिटल युग की मांगों को पूरा करने के लिए लगातार विकसित हो रहा है।" टिप्पणी करें।

दृष्टिकोण:

उत्तर में निम्नलिखित भाग होने चाहिए:

- **परिचय:** भारत में दूरसंचार क्षेत्र के महत्व और इसकी परिवर्तनकारी यात्रा को स्थापित करके शुरुआत करें।
- **मुख्य भाग:**
  - लैंडलाइन से डिजिटल युग तक की ऐतिहासिक प्रगति का चार्ट बनाएं।
  - दूरसंचार क्षेत्र के सामने आने वाली बाधाओं और इन चुनौतियों को दूर करने के लिए उठाए गए कदमों या नवाचारों दोनों को संबोधित करें।
- **निष्कर्ष:** भारत के डिजिटल परिदृश्य और इसके संभावित भविष्य प्रक्षेप पथ को परिभाषित करने में दूरसंचार क्षेत्र की केंद्रीय भूमिका पर जोर देते हुए निष्कर्ष दें।

मुख्य शब्द:

- डिजिटल सशक्तिकरण
- टेली घनत्व
- 3जी और 4जी युग
- डिजिटल इंडिया

IASBABA

- भारतनेट
- IoT (इंटरनेट ऑफ थिंग्स)
- एम2एम (मशीन से मशीन)

परिचय:

पिछले कुछ दशकों में भारत का दूरसंचार क्षेत्र एक राज्य-नियंत्रित उद्योग से एक जीवंत और अत्यधिक प्रतिस्पर्धी बाजार में बदल गया है। दुनिया के दूसरे सबसे बड़े दूरसंचार बाजार के रूप में, भारत अपनी विशाल आबादी की बढ़ती मांगों को पूरा करने, निर्बाध कनेक्टिविटी को सक्षम करने और डिजिटल सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए दूरसंचार नवाचारों का लाभ उठाने में सबसे आगे है।

मुख्य भाग:

विकास और प्रगति:

- **लैंडलाइन से मोबाइल तक:**
  - 1990 के दशक में लैंडलाइन से मोबाइल फोन की ओर धीरे-धीरे बदलाव देखा गया।
  - नई **दूरसंचार नीति का** उद्देश्य टेली-घनत्व बढ़ाना और दूरसंचार को अधिक सुलभ बनाना था।
- **मोबाइल क्रांति:**
  - निजी अभिकर्ताओं के प्रवेश के साथ, 2000 के दशक की शुरुआत में मोबाइल ग्राहकों में विस्फोटक वृद्धि देखी गई।
  - प्रीपेड सेवाओं, कम लागत वाले हैंडसेट और किफायती कॉल दरों जैसे नवाचारों ने मोबाइल फोन को जनता के लिए किफायती बना दिया।
- **3जी और 4जी युग:**
  - 2010 के बाद, 3जी और बाद में 4जी तकनीक की शुरूआत ने डेटा खपत पैटर्न को तेज कर दिया।
  - **यूट्यूब, नेटफ्लिक्स जैसे प्लेटफॉर्म और हॉटस्टार जैसी स्थानीय स्ट्रीमिंग सेवाएं** फली-फूलीं, जिससे भारत विश्व स्तर पर डेटा के सबसे बड़े उपभोक्ताओं में से एक बन गया।
- **डिजिटल पहल:**
  - डिजिटल इंडिया अभियान जैसी सरकार द्वारा संचालित पहल ने दूरसंचार की भूमिका को और बढ़ा दिया है।
  - व्यापक दूरसंचार नेटवर्क की बदौलत **डिजिटल भुगतान (उदाहरण के लिए, यूपीआई), ऑनलाइन प्रशासन और ई-शिक्षा जैसी** सेवाएं मुख्यधारा बन गईं।
- **कोविड-19 और दूरसंचार:**
  - महामारी ने दूरसंचार क्षेत्र की गंभीरता को रेखांकित किया।
  - मजबूत दूरसंचार बुनियादी ढांचे के कारण **घर से काम करने की संस्कृति, ऑनलाइन शिक्षा और टेलीमेडिसिन संभव हो सके।**

चुनौतियाँ और नवाचार:

- **बुनियादी ढांचा और ग्रामीण कनेक्टिविटी:**
  - जहां शहरी क्षेत्रों में अच्छी कनेक्टिविटी है, वहीं ग्रामीण क्षेत्र पिछड़े हुए हैं।

IASBABA

- भारतनेट **परियोजना का** लक्ष्य 600,000 से अधिक गांवों को हाई-स्पीड इंटरनेट से जोड़कर इस अंतर को पाटना है।

- **सामर्थ्य और गुणवत्ता:**
  - सबसे सस्ते डेटा बाज़ारों में से एक होने के बावजूद, लगातार गुणवत्ता सुनिश्चित करना, विशेष रूप से घनी आबादी वाले क्षेत्रों में, एक चुनौती बनी हुई है।

- **उभरती तकनीकी:**
  - दुनिया के 5जी तकनीक की ओर बढ़ने के साथ, अपने बुनियादी ढांचे को उन्नत करने की जिम्मेदारी भारत पर है।
  - दूरसंचार क्षेत्र IoT (इंटरनेट ऑफ थिंग्स), **AI** (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस), **और M2M** (मशीन टू मशीन) संचार **में नवाचारों पर भी नजर रख रहा है।**

निष्कर्ष:

भारत का दूरसंचार कैनवास, नवाचार, चुनौतियों और अवसरों के जीवंत रंगों के साथ, वास्तव में डिजिटल युग की गतिशीलता को प्रतिबिंबित करता है। 5जी की संभावित शुरूआत और डिजिटल समावेशिता की ओर निरंतर दबाव के साथ, यह क्षेत्र आगे परिवर्तन के लिए तैयार है। यह न केवल लगातार बढ़ती उपभोक्ता मांगों को पूरा करेगा बल्कि भारत के डिजिटल भविष्य की पटकथा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

Value Addition Points:

दूरसंचार का व्यापक प्रभाव:

- **आर्थिक योगदान:** दूरसंचार क्षेत्र का देश की जीडीपी में महत्वपूर्ण योगदान रहा है और इसने रोजगार के कई अवसर प्रदान किए हैं।
- **अन्य उद्योगों के लिए उत्प्रेरक:** दूरसंचार ने आवश्यक बुनियादी ढांचा प्रदान करके कई अन्य क्षेत्रों, विशेष रूप से ई-कॉमर्स, ओटीटी प्लेटफॉर्म और फिनटेक को बढ़ावा दिया है।
- **स्थिरता के प्रयास:** कई दूरसंचार कंपनियां अब अपने टावरों को बिजली देने के लिए हरित ऊर्जा समाधानों पर ध्यान केंद्रित कर रही हैं, जो सतत विकास के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।
- **उन्नत उपयोगकर्ता अनुभव:** उपभोक्ता आधार को संलग्न करने के लिए वैयक्तिकृत सेवाओं, मूल्य वर्धित सेवाओं (वीएएस), और इंटरैक्टिव प्लेटफार्मों की शुरूआत।
- **वैश्विक सहयोग:** भारतीय दूरसंचार ऑपरेटर वैश्विक अभिकर्ताओं के साथ तेजी से सहयोग कर रहे हैं, जिससे तकनीकी आदान-प्रदान और सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा किया जा रहा है।

Q5. कैसीनो और ऑनलाइन गेमिंग पर 28 प्रतिशत जीएसटी लगाने के भारत सरकार के फैसले के कारणों पर चर्चा करें। ऑनलाइन गेमिंग उद्योग पर इस कदम के परिणामों का विश्लेषण करें। आपकी राय में क्या यह कदम उचित है?

दृष्टिकोण:

उत्तर में निम्नलिखित भाग होने चाहिए:

- **परिचय:** ऑनलाइन गेमिंग वेबसाइटों और कैसीनो पर 28% जीएसटी लगाने के हालिया निर्णय पर प्रकाश डालते हुए शुरुआत करें।

IASBABA

- **मुख्य भाग:**
  - 28% जीएसटी लगाने के पीछे के कारणों पर चर्चा करें।
  - ऑनलाइन गेमिंग उद्योग पर इस निर्णय के निहितार्थों की जाँच करें।
  - निर्णय के बारे में जीएसटी परिषद के भीतर आंतरिक चर्चा की समीक्षा करें।
- **निष्कर्ष:** दिए गए तर्कों का सारांश देते हुए निष्कर्ष दें और कर लगाने के समग्र औचित्य पर एक संतुलित राय प्रदान करें।

मुख्य शब्द:

- जीएसटी परिषद
- 28% जीएसटी लगाना
- कार्रवाई योग्य दावे
- ऑनलाइन गेमिंग उद्योग
- कराधान बदलाव
- उद्योग पुशबैक
- विपक्ष

परिचय:

ऑनलाइन गेमिंग वेबसाइटों और कैसीनो पर 28% वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) लगाने का भारत सरकार का निर्णय राजस्व संग्रह को सुव्यवस्थित करने और कराधान परिदृश्य में स्पष्टता लाने के प्रयासों का प्रतिबिंब है।

मुख्य भाग:

28% जीएसटी लगाने के कारण:

- **पृष्ठभूमि और निर्णय लेने की प्रक्रिया:**
  - यह अधिरोपण एक प्रतिनिधि संवैधानिक निकाय, जीएसटी परिषद की सिफारिशों से उपजा है।
  - 2017 में जीएसटी की शुरुआत के बाद से सट्टेबाजी और जुए से जुड़े कार्रवाई योग्य दावों पर इस दर से कर लगाया गया है।
  - ऐसी गतिविधियों के लिए कर व्यवस्था में किसी भी अस्पष्टता को खत्म करने के लिए जुलाई 2023 में 50वीं जीएसटी परिषद की बैठक के दौरान इसे और मजबूत किया गया।

ऑनलाइन गेमिंग उद्योग पर परिणाम:

- **कराधान बदलाव:**
  - निर्णय से पहले, ऑनलाइन गेमिंग फर्मों ने प्लेटफ़ॉर्म शुल्क पर 18% जीएसटी (कुल अंकित मूल्य का 5-20%) का भुगतान किया था।
  - 28% की छलांग से उनके परिचालन ओवरहेड्स में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।
- **उद्योग पुशबैक:**
  - इस नई दर के प्रति उद्योग जगत के विरोध के कारण न केवल चिंताएं व्यक्त की गईं, बल्कि कानूनी टकराव भी शुरू हो गया है।

IASBABA

- **विकास पर संभावित प्रभाव:**
    - बढ़ी हुई लागत के साथ, क्षेत्र की वृद्धि पर हानिकारक प्रभाव पड़ सकता है, संभवतः नए लोगों को हतोत्साहित किया जा सकता है और प्रतिस्पर्धा पर अंकुश लगाया जा सकता है।

जीएसटी परिषद के भीतर चर्चा और असहमति:

- **राज्य विपक्ष:**
    - बाद की 51वीं जीएसटी परिषद की बैठक में, कुछ राज्यों ने आपत्तियां व्यक्त कीं, जो विभाजित राय और कर द्वारा लाई जा सकने वाली संभावित जटिलताओं का संकेत है।

निष्कर्ष:

हालांकि ऑनलाइन गेमिंग और कैसीनो पर 28% जीएसटी के पीछे की मंशा स्पष्टता सुनिश्चित करने और सरकारी राजस्व को बढ़ाने के अनुरूप प्रतीत होती है, लेकिन **उद्योग के विकास और नवाचार पर संभावित असर को खारिज नहीं किया जा सकता है।** जबकि एक मानकीकृत कर व्यवस्था वर्गीकरण को सरल बनाती है और राजस्व बढ़ाती है, इसे उद्योग के विकास और हितधारक की भावना के अनुरूप रखा जाना चाहिए। इसलिए, जबकि कर लगाना राजस्व के दृष्टिकोण से रक्षात्मक है, गेमिंग क्षेत्र के प्रक्षेपवक्र पर इसके व्यापक प्रभाव के लिए गहन चिंतन और शायद अधिक संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

Value Addition Points:

समग्र परिप्रेक्ष्य के लिए विचार:

- **कर सामंजस्य:** समान कर दरें जटिल कर संरचना को सुव्यवस्थित करने और व्यापार करने में आसानी बढ़ाने में मदद करती हैं।
- **वैश्विक मानक:** अन्य देशों के साथ ऑनलाइन गेमिंग पर भारत की कर दरों की तुलना करने से यह जानकारी मिल सकती है कि क्या दर बहुत अधिक है, बहुत कम है, या वैश्विक मानकों के अनुरूप है।
- **उपभोक्ता प्रभाव:** गेमिंग कंपनियों की लागत में संभावित वृद्धि से उपभोक्ताओं के लिए कीमतें बढ़ सकती हैं या ऑनलाइन गेम की गुणवत्ता और विविधता में कमी आ सकती है।
- **राजस्व उपयोग:** इस दर वृद्धि से प्राप्त अतिरिक्त राजस्व का उपयोग कैसे किया जाएगा, इस पर स्पष्टता निर्णय की योग्यता का आकलन करने में मदद कर सकती है।
- **तकनीकी उन्नति:** एआर, वीआर और क्लाउड गेमिंग जैसी प्रगति के साथ संपन्न डिजिटल परिदृश्य, ऑनलाइन गेमिंग में और क्रांति लाने के लिए तैयार है। एक अनुकूलनीय कर व्यवस्था ऐसे नवाचारों को बढ़ावा या दबा सकती है।

Q6. आपकी राय में, भारत की G20 अध्यक्षता "वैश्विक सद्भाव और हरित वित्त की आवाज़" कैसे बन सकती है? उदाहरण सहित चर्चा करें।

दृष्टिकोण:

उत्तर में निम्नलिखित भाग होने चाहिए:

- **परिचय:** भारत के दार्शनिक सार, "वसुधैव कुटुंबकम" से शुरुआत करें और वैश्विक नीतियों को तैयार करने में जी20 की अध्यक्षता के महत्व पर जोर देकर आरंभ करें।
- **मुख्य भाग:**

IASBABA

- जीडीपी-केंद्रित से मानव-केंद्रित नीतियों में बदलाव की आवश्यकता पर चर्चा करें।
- लचीली वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं के महत्व पर प्रकाश डालें।
- बहुपक्षवाद को बढ़ावा देने में भारत के अध्यक्ष पद की भूमिका पर जोर दें।
- हरित वित्त को बढ़ावा देने और जलवायु कार्रवाई का समर्थन करने में भारत की पहल पर चर्चा करें।
- सतत जीवनशैली की दिशा में भारत के प्रयासों और उनके वैश्विक प्रभावों पर चर्चा करें।
- विभाजन को पाटने में तकनीकी समावेशिता की भूमिका पर टिप्पणी करें।
- महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास को बढ़ावा देने के महत्व को बताएं।

- **निष्कर्ष:** वैश्विक सद्भाव और एकता को बढ़ावा देने वाले जी20 में एक नेता के रूप में भारत की भूमिका पर जोर देते हुए संक्षेप में निष्कर्ष दें।

मुख्य शब्द:

- वसुधैव कुटुंबकम
- मानव-केन्द्रित वैश्वीकरण
- वैश्विक दक्षिण
- हरित वित्त
- सतत पर्यावरण के लिए जीवन शैली (LiFE)
- डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर (DPI)
- महिलाओं के नेतृत्व वाला विकास

परिचय:

जी20 की अध्यक्षता में भारत का आरोहण वैश्विक चर्चा और नीतियों का मार्गदर्शन करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है। दार्शनिक सिद्धांत, **"वसुधैव कुटुंबकम" से प्रेरणा लेते हुए (संसार एक परिवार है),** भारत का G20 नेतृत्व मानव-केंद्रित वैश्वीकरण को बढ़ावा देना चाहता है। वैश्विक सद्भाव और हरित वित्त पर ध्यान भारत के अध्यक्ष पद को आज के परस्पर युग में असाधारण रूप से प्रासंगिक बनाता है।

मुख्य भाग:

सकल घरेलू उत्पाद-केंद्रित दृष्टिकोण की तुलना में मानव-केंद्रित दृष्टिकोण:

- महामारी के बाद की दुनिया को पूरी तरह से जीडीपी-संचालित दृष्टिकोण से अधिक समग्र, मानव-केंद्रित दृष्टिकोण में बदलाव की आवश्यकता है।
- भारत की G20 अध्यक्षता के तहत, इस प्रतिमान को अपनाने की दिशा में सक्रिय जोर दिया जा रहा है।
- उदाहरण के लिए, विकासशील देशों, विशेषकर वैश्विक दक्षिण और अफ्रीका की हाशिये पर पड़ी आकांक्षाओं को चिन्हित करना और उनकी चिंताओं को जी20 के एजेंडे में एकीकृत करने का प्रयास करना।

वैश्विक आपूर्ति शृंखला को मजबूत बनाना:

- लचीली और विश्वसनीय वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं की अनिवार्यता को महसूस करते हुए, भारत निर्बाध व्यापार और विकास सुनिश्चित करने के लिए उनकी वृद्धि पर जोर देता है।

IASBABA

- उदाहरण के लिए, आपूर्ति श्रृंखलाओं में विश्वसनीयता पर जोर, विशेष रूप से महामारी के दौरान देखा गया, सतत और भरोसेमंद व्यापार मार्गों को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण हो जाता है।

बहुपक्षवाद को बढ़ावा देना:

- भारत के तहत G20 की अध्यक्षता वैश्विक संस्थानों के सुधार पर जोर देती है, एक मजबूत और अधिक न्यायसंगत बहुपक्षीय विश्व व्यवस्था को बढ़ावा देती है।
- उदाहरण के लिए, **वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट का आयोजन** और अफ्रीकी संघ को स्थायी जी20 सदस्य के रूप में शामिल करने की वकालत करना एक अधिक समावेशी वैश्विक मंच के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

हरित वित्त और जलवायु कार्रवाई को बढ़ावा देना:

- भारत की अध्यक्षता ने जलवायु वित्त के महत्व को रेखांकित किया है और विकसित देशों से पर्यावरणीय क्षरण में उनके ऐतिहासिक योगदान को देखते हुए जिम्मेदारी उठाने का आग्रह किया है।
- **ग्रीन हाइड्रोजन इनोवेशन सेंटर** जैसे वैश्विक पारिस्थितिकी तंत्र को लॉन्च करना और ग्लोबल बायोफ्यूल्स एलायंस और इंटरनेशनल सोलर एलायंस जैसे अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना।

सतत जीवन शैली को बढ़ावा देना:

- बड़े पैमाने पर नीतिगत बदलावों से परे, भारत की जी20 प्रेसीडेंसी जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए व्यक्तिगत स्तर पर जीवनशैली में बदलाव की वकालत करती है।
- उदाहरण के लिए, **सतत पर्यावरण के लिए जीवन शैली (LiFE) जैसी पहल शुरू करना** और **बाजरा (श्री अन्ना) जैसी फसलों के साथ जलवायु-स्मार्ट कृषि को बढ़ावा देना।**

तकनीकी समावेशिता:

- विभाजन को पाटने में प्रौद्योगिकी की क्षमता को पहचानते हुए, भारत ने उदाहरण दिया है कि कैसे तकनीकी प्रगति लाभों को लोकतांत्रिक बना सकती है और असमानताओं को कम कर सकती है।
- उदाहरण के लिए, **डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर (DPI) के माध्यम से,** भारत अरबों लोगों को वित्तीय रूप से शामिल करने में सक्षम है, ऐसे समाधान पेश करता है जिन्हें विश्व स्तर पर बढ़ाया जा सकता है।

महिला नेतृत्व वाला विकास:

- भारत की G20 अध्यक्षता लैंगिक समानता के महत्व पर जोर देती है, लैंगिक डिजिटल विभाजन को कम करने की वकालत करती है और सभी क्षेत्रों में महिलाओं के नेतृत्व पर जोर देती है।
- उदाहरण के लिए, श्रम बल भागीदारी अंतराल को कम करने और नेतृत्व और निर्णय लेने वाले पदों में महिलाओं के लिए एक बड़ी भूमिका की वकालत करने की **दिशा में सक्रिय प्रयास।**

निष्कर्ष:

भारत की G20 प्रेसीडेंसी, 'वसुधैव कुटुंबकम' के लोकाचार को दोहराते हुए, मानव-केंद्रित वैश्वीकरण के भविष्य को तैयार करने का प्रयास करती है, जहां कोई भी पीछे नहीं रहेगा। वैश्विक सद्भाव, समावेशी विकास और हरित वित्त पर जोर देकर, भारत का जी20 नेतृत्व एक ऐसी दुनिया के लिए मंच तैयार करता है जहां एकता और सहयोग कलह और अलगाव पर विजय प्राप्त करता है। यह सामूहिक प्रगति के लिए एक स्पष्ट आह्वान है, जो यह सुनिश्चित करता है कि वैश्विक तालिका न केवल हर देश को समायोजित करती है बल्कि उनकी आकांक्षाओं और चिंताओं के साथ भी प्रतिध्वनित होती है।

IASBABA

Value Addition Points:

भारतीय पहलों के माध्यम से वैश्विक सहयोग बढ़ाना:

- **सांस्कृतिक कूटनीति:** वैश्विक स्तर पर कल्याण और सतत जीवन को बढ़ावा देने के लिए योग जैसी भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का लाभ उठाना।
- **आर्थिक समावेशिता:** भारत की आर्थिक नीतियों, जैसे उज्ज्वला योजना या जन धन योजना, की सफलता को समावेशी विकास के मॉडल के रूप में साझा करना।
- **डिजिटल साक्षरता:** डिजिटल विभाजन को पाटने और वैश्विक कनेक्टिविटी को बढ़ाने के साधन के रूप में डिजिटल शिक्षा और साक्षरता को बढ़ावा देना।
- **जैव-विविधता संरक्षण:** अपनी समृद्ध जैव विविधता के संरक्षण में भारत के प्रयासों और वैश्विक पारिस्थितिक संतुलन के लिए इसके संभावित प्रभावों पर प्रकाश डालना।
- **युवा जुड़ाव:** वैश्विक शांति और समझ को बढ़ावा देने के लिए अंतरराष्ट्रीय युवा आदान-प्रदान कार्यक्रमों और सहयोग को बढ़ावा देकर भारत के युवा जनसांख्यिकीय का लाभ उठाना।

Q7. "साइबर स्वच्छता (cyber hygiene)" क्या है? यह महत्वपूर्ण क्यों है? कुछ साइबर स्वच्छता सर्वोत्तम प्रथाओं का सुझाव दें जो भारत को लगभग अचूक साइबर सुरक्षा हासिल करने में मदद कर सकती हैं।

दृष्टिकोण:

उत्तर में निम्नलिखित भाग होने चाहिए:

- **परिचय:** साइबर स्वच्छता को परिभाषित करें और अवधारणा की स्पष्ट समझ देने के लिए व्यक्तिगत स्वच्छता के साथ इसकी तुलना करें।
- **मुख्य भाग:**
  - भारतीय संदर्भ पर जोर देते हुए साइबर स्वच्छता के महत्व पर चर्चा करें।
  - उदाहरण देते हुए उन सर्वोत्तम प्रथाओं का विवरण दें जिन्हें भारत उन्नत साइबर सुरक्षा के लिए अपना सकता है।
- **निष्कर्ष:** समकालीन डिजिटल युग में, विशेष रूप से भारत जैसे तेजी से डिजिटल होते देश के लिए, साइबर स्वच्छता के सर्वोपरि महत्व को दोहराते हुए निष्कर्ष दें।

मुख्य शब्द:

- साइबर स्वच्छता
- डिजिटल इंडिया
- रैंसमवेयर
- द्वि-स्तरीय प्रमाणीकरण (Two-factor Authentication)
- फ़िशिंग
- डेटा बैकअप
- साइबर सुरक्षा ऑडिट

परिचय:

IASBABA

साइबर स्वच्छता उन प्रथाओं और कदमों को संदर्भित करती है जो कंप्यूटर और अन्य डिजिटल उपकरणों के उपयोगकर्ता सिस्टम स्वास्थ्य को बनाए रखने और ऑनलाइन सुरक्षा में सुधार करने के लिए अपनाते हैं। जिस तरह व्यक्तिगत स्वच्छता प्रथाएं बीमारी के जोखिम को कम करती हैं**, उसी तरह साइबर स्वच्छता प्रथाएं डेटा को चोरी और साइबर हमलों से सुरक्षित और अच्छी तरह से संरक्षित रखने में मदद कर सकती हैं।**

मुख्य भाग:

साइबर स्वच्छता क्यों महत्वपूर्ण है:

- **साइबर खतरों का प्रसार:** जैसे-जैसे डिजिटल परिदृश्य का विस्तार होता है, वैसे-वैसे साइबर खतरों की संख्या और जटिलता भी बढ़ती है। मैलवेयर, रैंसमवेयर, फ़िशिंग हमले और डेटा उल्लंघन अधिक परिष्कृत होते जा रहे हैं, जिससे साइबर स्वच्छता आवश्यक हो गई है।
- **तेजी से डिजिटलीकरण:** डिजिटल अर्थव्यवस्था और "डिजिटल इंडिया" जैसी पहलों पर जोर देने के कारण, भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या में विस्फोट देखा गया है, जिसके लिए मजबूत साइबर स्वच्छता उपायों की आवश्यकता है।
- **आर्थिक निहितार्थ:** साइबर हमले के परिणामस्वरूप पर्याप्त वित्तीय नुकसान हो सकता है, जो हमले के तत्काल प्रभाव और संबंधित डाउनटाइम या व्यावसायिक प्रतिष्ठा की हानि दोनों तरह से है।
- **डेटा गोपनीयता:** ऑनलाइन व्यक्तिगत डेटा के बढ़ते साझाकरण और संग्रह के साथ, व्यक्तिगत गोपनीयता अधिकारों की रक्षा करने और अनधिकृत पहुंच को रोकने के लिए साइबर स्वच्छता बनाए रखना सर्वोपरि है।

भारत के लिए साइबर स्वच्छता सर्वोत्तम प्रथाएँ:

- **नियमित अपडेट:** सुनिश्चित करें कि सभी सिस्टम, सॉफ़्टवेयर और एप्लिकेशन नियमित रूप से अपडेट किए जाते हैं। **उदाहरण के लिए, WannaCry रैंसमवेयर हमले ने** पुराने सिस्टम में कमजोरियों का फायदा उठाया।
- **मजबूत पासवर्ड:** जटिल पासवर्ड के उपयोग को प्रोत्साहित करें और उन्हें नियमित रूप से बदलें। अतिरिक्त सुरक्षा के लिए **पासवर्ड प्रबंधकों का उपयोग करने और द्वि-स्तरीय प्रमाणीकरण को बढ़ावा देने पर** विचार करें।
- **शिक्षित करें और प्रशिक्षित करें:** साइबर स्वच्छता के महत्व पर राष्ट्रव्यापी अभियान और कार्यशालाएं शुरू करें, जिसमें वास्तविक दुनिया के परिदृश्यों पर जोर दिया जाए, **जैसे कि फ़िशिंग प्रयास** जिसके कारण प्रमुख निगमों में महत्वपूर्ण डेटा उल्लंघन हुए।
- **बैकअप डेटा: नियमित डेटा बैकअप को बढ़ावा दें, यह सुनिश्चित करते हुए कि रैंसमवेयर जैसे** साइबर हमले के मामले में, महत्वपूर्ण जानकारी खो न जाए।
- **सुरक्षित वाई-फाई नेटवर्क:** "मैन-इन-द-मिडिल" हमलों को रोकने के लिए, विशेष रूप से सार्वजनिक स्थानों पर, वाई-फाई नेटवर्क के लिए मजबूत एन्क्रिप्शन के उपयोग को प्रोत्साहित करें।
- **फ़ायरवॉल और एंटीवायरस सॉफ़्टवेयर:** सुनिश्चित करें कि दोनों उपकरणों पर स्थापित, अद्यतन और नियमित रूप से निगरानी किए जाते हैं, जो दुर्भावनापूर्ण सॉफ़्टवेयर के खिलाफ एक रक्षा पंक्ति प्रदान करते हैं।
- **उपयोगकर्ता विशेषाधिकारों को सीमित करना:** सिस्टम पर प्रत्येक उपयोगकर्ता को प्रशासनिक विशेषाधिकारों की आवश्यकता नहीं होती है। पहुंच को सीमित करके, उल्लंघनों से होने वाली संभावित क्षति को कम किया जा सकता है।
- **नियमित ऑडिट:** सरकार और व्यवसायों को कमजोरियों की पहचान करने और उन्हें सुधारने के लिए नियमित साइबर सुरक्षा ऑडिट करना चाहिए।

निष्कर्ष:

IASBABA

साइबर स्वच्छता उन बुनियादी स्वास्थ्य सावधानियों के समान है जो हम अपने दैनिक जीवन में अपनाते हैं। जिस तरह हाथ धोने से कई बीमारियों से बचा जा सकता है, उसी तरह अच्छी साइबर स्वच्छता का अभ्यास करने से संभावित साइबर खतरों के एक महत्वपूर्ण हिस्से को रोका जा सकता है। चूंकि भारत खुद को एक वैश्विक डिजिटल पावरहाउस के रूप में रखता है, इसलिए मजबूत साइबर स्वच्छता प्रथाओं के माध्यम से अपने डिजिटल बुनियादी ढांचे और उपयोगकर्ताओं की साइबर सुरक्षा सुनिश्चित करना न केवल आवश्यक है; बल्कि यह अनिवार्य है।

Value Addition Points:

साइबर लचीलापन बढ़ाना:

- **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग:** सर्वोत्तम प्रथाओं का आदान-प्रदान करने और एक वैश्विक रक्षा नेटवर्क बनाने के लिए इज़राइल या एस्टोनिया जैसे साइबर सुरक्षा के लिए प्रसिद्ध देशों के साथ साझेदारी बनाना।
- **उन्नत ख़तरा इंटेलिजेंस:** वास्तविक समय में ख़तरे का पता लगाने के लिए एआई और मशीन लर्निंग को लागू करें, यह सुनिश्चित करते हुए कि नुकसान पहुंचाने से पहले खतरों की पहचान की जाती है और उन्हें बेअसर कर दिया जाता है।
- **उद्योग-विशिष्ट प्रोटोकॉल:** पहचानें कि विभिन्न क्षेत्रों (बैंकिंग, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा) में अद्वितीय कमजोरियाँ हैं। क्षेत्र-विशिष्ट साइबर स्वच्छता प्रोटोकॉल विकसित करें।
- **नियमित साइबर अभ्यास:** सरकारी और कॉर्पोरेट दोनों स्तरों पर नकली साइबर-हमले अभ्यास आयोजित करें। इस तरह के अभ्यास सिस्टम के लचीलेपन का परीक्षण कर सकते हैं और वास्तविक दुनिया के साइबर खतरों से निपटने में कर्मियों को प्रशिक्षित भी कर सकते हैं।
- **सामुदायिक सहभागिता:** सामुदायिक स्तर पर जागरूकता अभियान चलाएँ। व्यक्तियों को संदिग्ध ऑनलाइन गतिविधियों को पहचानने और रिपोर्ट करने के लिए सशक्त बनाना।
- **राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा डैशबोर्ड:** सभी सरकारी एजेंसियों के लिए सुलभ एक केंद्रीकृत डैशबोर्ड बनाएं, जो देश भर में साइबर खतरों और उल्लंघनों पर वास्तविक समय डेटा प्रदान करे।
- **इनोवेशन हब:** अद्वितीय भारतीय साइबर सुरक्षा चुनौतियों के लिए स्वदेशी समाधानों के विकास को प्रोत्साहित करते हुए, साइबर सुरक्षा अनुसंधान और नवाचार के लिए समर्पित केंद्र स्थापित करें।

IASBABA